[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3872 H

Unique Paper Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : B.Com. (Prog.) CBCS

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी उपन्यास के विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी नाटक के विकास का सामान्य परिचय दीजिए। (12)

2. "गुण्डा' वस्तुतः गुण्डा नहीं हैं। वह काशी के मजलूमों का, निर्बलों का, अरक्षितों का रक्षक है।" - कथन के आधार पर नन्हकूसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

P.T.O.

'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

3. 'मेले का ऊँट' बालमुकुंद गुप्त की व्यंग्यात्मक रचना का उत्कृष्ट नमूना। विवेचन कीजिए।

अथवा

'सदाचार का ताबीज' पाठ का सार लिखिए।

4. रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'बिबिया' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'अंधेर नगरी' नाटक की प्रांसगिकता पर विचार कीजिए।

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :

- प्रेमचंदोत्तर कहानी
- रिपोर्ताज

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए :-

(क) बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है। बूढ़ी काकी जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने क की ओर आकर्षित करने का, रोने के अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा ही समस्त इन्द्रियाँ, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे। पृथ्वी पर प रहतीं और घर वाले कोई बात उनकी इच्छा के प्रतिकूल करते, भोज

का समय टल जाता या उसका परिमाण पूर्ण न होता अथवा बाजार से कोई वस्तु आती और न मिलती तो ये रोने लगती थीं। उनका रोना-सिसकना साधारण रोना न था, वे गला फाड़-फाड़कर रोती थीं।

अथवा

नन्हकू उन्मत्त था। उसके थोड़े-से साथी उसकी आज्ञा पर जान देने के लिए तुले थे। वह नहीं जानता था कि राजा चेतसिंह का क्या राजनैतिक अपराध है ? उसने कुछ सोचकर अपने थोड़े-से साथियों को फाटक पर गड़बड़ मचाने के लिए भेज दिया। इधर अपनी डोंगी लेकर शिवालय की खिड़की के नीचे धारा काटता हुआ पहुंचा। किसी तरह निकले हुए पत्थर में रस्सी अटका-कर, उस चंचल डोंगी को उसने स्थिर किया और बंदर की तरह उछल कर खिड़की के भीतर हो रहा। उस समय वहां राजमाता पन्ना और राजा चेतसिंह से बाबू मनियार सिंह कह रहे थे- "आपके यहां रहने से, हम लोग क्या करें, यह समझ में नहीं आता। पूजा-पाठ समाप्त करके आप रामनगर चली गयी होतीं, तो यह......."

(ख) एक दरबारी ने कहा, 'हुजूर, वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी, क्योंकि हमारी आंखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि

आँखें आंजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूंढने का काम सौंपें।'

अथवा

आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिं जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं कर कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी आं पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया ? संसार ने निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सा आँचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी

(10×2=2